

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

A Monthly Peer Reviewed Journal

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 3, Issue 7, July 2014

पुरातन संस्कृति की प्रासंगिकता

डॉ. मंजूषा मिश्रा

एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, का. सु. साकेत स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अयोध्या

सार

मनुष्य सामाजिक प्राणी है और समूहों में रहता है। विश्व के समस्त जीवधारियों में केवल वही संस्कृति का निर्माता है। इस विशेषता का मूल कारण है भाषा। भाषा के ही माध्यम से एक पीढ़ी की संचित अनुभूति भविष्य की पीढ़ियों को मिलती है। प्रत्येक पीढ़ी की संस्कृति का विकास होता है। संस्कृति परिसर का वह भाग है जिसका निर्माण मानव स्वयं करता है। ई. बी. टाइलर के अनुसार संस्कृति उस समुच्चय का नाम है जिसमें ज्ञान, विश्वास, कला, नीति, विधि, रीति-रिवाज़ तथा अन्य ऐसी क्षमताओं और आदतों का समावंश रहता है जिन्हें मनुष्य समाज के सदस्य के रूप में मानता है।

सांस्कृतिक मानवशास्त्री उन तरीकों का अध्ययन करता है जिससे मानव अपनी प्राकृतिक एवं सामाजिक स्थिति का सामना करता है, रस्म रिवाजों को सीखता और उन्हें एक पुस्तक से अगली पुस्तक को प्रदान करता है। भिन्न-भिन्न संस्कृतियों में एक ही साध्य के कई साधन हैं। पारिवारिक संबंधों का संगठन, मछली पकड़ने के फंदे तथा जगत् के निर्माण के सिद्धांत प्रत्येक समाज में अलग-अलग हैं। फिर भी प्रत्येक समाज में जीवन कार्य-कलाप सुनियोजित है। आंतरिक विकास या बाह्य संपर्क के कारण परंपरा के स्थिर रूप भी बदलते हैं। व्यक्ति एक विशेष समाज में जन्म लेकर उन रस्म-रिवाजों को ग्रहण करता है, व्यवहार करता है और प्रभावित करता है जो उसकी सांस्कृतिक विरासत हैं। सांस्कृतिक मानव शास्त्र के अंतर्गत ऐसे सारे विषय आते हैं।

परिचय

संस्कृति शब्द का प्रयोग अनेक अर्थों में होता है। मानवशास्त्र में इसका प्रयोग एक विशिष्ट अर्थ में होता है। यह उसका आधारभूत सिद्धांत है। संस्कृति के गुण निम्नलिखित हैं-

- (1) मानव संस्कृति के साथ जन्म नहीं लेता लेकिन उसमें संस्कृति ग्रहण करने की क्षमता होती है। वह उसे सीखता है। इस प्रक्रिया को संस्कृतीकरण कहते हैं।
- (2) संस्कृति का उद्भव मानव जीवन के प्राणि शास्त्रीय, परिसरीय मनोवैज्ञानिक और ऐतिहासिक अंगों से होता है। उसके निरूपण और विकास में इन तत्वों का बहुमूल्य योग होता है।
- (3) संस्कृति की संरचना के विशिष्ट भाग हैं। सबसे छोटे भाग को सांस्कृतिक तत्व (Culture Trait) कहते हैं। कई तत्वों को मिलाकर एक तत्व समूह (Complex) होता है। एक संस्कृति में अनेक सांस्कृतिक तत्व समूह होते हैं। इसके अतिरिक्त कई संस्कृतियों में एक या अधिक प्रेरक सिद्धांत होते हैं जो उन्हें विशिष्टता प्रदान करते हैं।
- (4) संस्कृति अनेक विभागों में विभक्त होती है, जैसे भौतिक संस्कृति (तकनीकी ज्ञान और अर्थव्यवस्था), सामाजिक संस्थाएँ (सामाजिक संगठन, शिक्षा, राजनीतिक संगठन) धर्म और विश्वास, कला एवं लोकवार्ता, भाषा इत्यादि।
- (5) संस्कृति परिवर्तनशील है। संस्कृति के प्रत्येक अंग में परिवर्तन होता रहता है, किसी में तीव्रता से, किसी में मंद गति से। बाह्य प्रभाव भी बिना सोचे-समझे ग्रहण नहीं किए जाते। किसी में विरोध कम होता है, किसी में अधिक।
- (6) संस्कृति में विभिन्नताएँ होती हैं जो कभी-कभी एक ही समाज के व्यक्तियों के व्यवहार में प्रदर्शित होती हैं। जितनी छोटी इकाई होगी उतना ही कम अंतर उसके सदस्यों के आचार-विचार में होगा।

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

A Monthly Peer Reviewed Journal

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 3, Issue 7, July 2014

(7) संस्कृति के स्वरूप, प्रक्रियाओं और गठन में एक नियमबद्धता होती है जिससे उसका वैज्ञानिक विश्लेषण संभव होता है।

(8) संस्कृति के माध्यम से मानव अपने संपूर्ण परिसर से समवस्थित होता है और उसे रचनात्मक अभिव्यक्ति का साधन मिलता है।[1,2]



हिन्दू दर्शन

अवलोकन

सांस्कृतिक मानव शास्त्र वर्तमान काल की संस्कृतियों का ही केवल अध्ययन नहीं करता। मानव विकास के कितने ही गूढ़ रहस्य प्रागैतिहास के गर्भ में पड़े हैं। प्रागैतिहासिक पुरातत्ववेत्ता पृथ्वी के नीचे से खुदाई करके प्राचीन संस्कृतियों की छानबीन करते हैं। उसके आधार पर वे मानव विकास का क्रमबद्ध स्वरूप निश्चित करते हैं। खुदाई से भौतिक संस्कृति की बहुत-सी चीजें उपलब्ध होती हैं। अनुमान एवं कल्पना की सहायता से उस संस्कृति के सदस्यों के रहन-सहन, आचार-विचार, सामाजिक संगठन, धार्मिक विश्वास इत्यादि की रूपरेखा तैयार करते हैं। अतएव प्रागैतिहास सांस्कृतिक मानव शास्त्र का अभिन्न अंग है।

पीढ़ियों से, भारत में संयुक्त परिवार प्रणाली की प्रचलित परंपरा रही है। यह तब होता है जब एक परिवार के विस्तारित सदस्य - माता-पिता, बच्चे, बच्चों के जीवनसाथी और उनकी संतान आदि - एक साथ रहते हैं। आमतौर पर, सबसे पुराना पुरुष सदस्य संयुक्त भारतीय परिवार प्रणाली का मुखिया होता है। वह ज्यादातर सभी महत्वपूर्ण निर्णय और नियम बनाता है, और परिवार के अन्य सदस्यों द्वारा उनका पालन करने की संभावना है। अधिकांश मेट्रो शहरों में वर्तमान अर्थव्यवस्था, जीवन शैली और रहने की लागत अधिक है, जनसंख्या संयुक्त परिवार मॉडल को पीछे छोड़ रही है और एकल परिवार मॉडल को अपना रही है। पहले संयुक्त परिवार में रहना परिवार के सदस्यों के लिए प्यार और चिंता पैदा करने के उद्देश्य से था। हालाँकि, अब एक-दूसरे को समय देना एक चुनौती है क्योंकि उनमें से अधिकांश जीवित रहने की ज़रूरतों के लिए बाहर हैं। [3,4]



International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

A Monthly Peer Reviewed Journal

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 3, Issue 7, July 2014

दिवाली

1966 के एक अध्ययन में, ओरेनस्टीन और मिकलिन ने भारत के जनसंख्या डेटा और परिवार संरचना का विश्लेषण किया। उनके अध्ययन से पता चलता है कि 1911 से 1951 की अवधि में भारतीय घरेलू आकार समान रहे थे। इसके बाद, शहरीकरण और आर्थिक विकास के साथ, भारत ने पारंपरिक संयुक्त परिवार को और अधिक एकल परिवारों में तोड़ते हुए देखा है। सिन्हा ने अपनी पुस्तक में, भारतीय परिवार पर किए गए कई समाजशास्त्रीय अध्ययनों को सारांशित करने के बाद, नोट किया है कि पिछले 60 वर्षों में, भारत के अधिकांश हिस्सों में सांस्कृतिक प्रवृत्ति संयुक्त परिवार से एकाकी परिवारों में एक त्वरित परिवर्तन रही है, बहुत कुछ जनसंख्या प्रवृत्तियों की तरह दुनिया के अन्य हिस्सों में।[5,6]



कुबेर भगवान

भारत में परंपरागत रूप से बड़े संयुक्त परिवार, 1990 के दशक में, भारतीय परिवारों का एक छोटा प्रतिशत था, और औसतन प्रति व्यक्ति घरेलू आय कम थी। उन्होंने पाया कि संयुक्त परिवार अभी भी कुछ क्षेत्रों में और कुछ स्थितियों में, सांस्कृतिक परंपराओं के कारण और आंशिक रूप से व्यावहारिक कारकों के कारण बना हुआ है। ग्रामीण और शहरी पालन-पोषण में अलग-अलग विचारधाराओं के कारण निम्न सामाजिक-आर्थिक वर्गों के युवा अपने साथियों की तुलना में अपने परिवार के साथ समय बिताने के लिए अधिक इच्छुक हैं। शिक्षा के प्रसार और अर्थशास्त्र के विकास के साथ, पारंपरिक संयुक्त परिवार प्रणाली पूरे भारत में तेजी से टूट रही है और कामकाजी महिलाओं के प्रति दृष्टिकोण बदल गया है।[7,8]

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

A Monthly Peer Reviewed Journal

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 3, Issue 7, July 2014



भारतीय भोजन

विचार - विमर्श

भारतीय समाज में अरेंज मैरिज का चलन लंबे समय से है। आज भी, अधिकांश भारतीयों की शादी उनके माता-पिता और परिवार के अन्य सम्मानित सदस्यों द्वारा की जाती है। पहले शादी की उम्र छोटी थी। भारत की 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत में महिलाओं के लिए विवाह की औसत आयु बढ़कर 21 वर्ष हो गई है। 2009 में, लगभग 7% महिलाओं की शादी 18 साल की उम्र से पहले हो गई थी।

ज्यादातर शादियों में दुल्हन का परिवार दूल्हे को दहेज देता है। परंपरागत रूप से, दहेज को परिवार की संपत्ति में एक महिला का हिस्सा माना जाता था, क्योंकि एक बेटी का अपने जन्म के परिवार की अचल संपत्ति पर कोई कानूनी दावा नहीं था। इसमें आम तौर पर पोर्टेबल कीमती सामान जैसे गहने और घरेलू सामान भी शामिल होते हैं जिन्हें एक दुल्हन अपने पूरे जीवन में नियंत्रित कर सकती है। [9,10] ऐतिहासिक रूप से, अधिकांश परिवारों में पारिवारिक सम्पदा की विरासत पुरुष रेखा से नीचे चली गई। 1956 से, भारतीय कानून कानूनी इच्छा के बिना विरासत के मामलों में पुरुषों और महिलाओं को समान मानते हैं। भारतीय उत्तराधिकार और संपत्ति उत्तराधिकार के लिए कानूनी वसीयत का तेजी से उपयोग कर रहे हैं, 2004 तक लगभग 20 प्रतिशत कानूनी वसीयत का उपयोग कर रहे हैं। [11,12]

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

A Monthly Peer Reviewed Journal

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 3, Issue 7, July 2014



भारत में नृत्य में शास्त्रीय (ऊपर), अर्धशास्त्रीय, लोक और आदिवासी शामिल हैं।

भारत में, तलाक की दर कम है - संयुक्त राज्य अमेरिका में लगभग 40% की तुलना में 1%। हालांकि ये आंकड़े पूरी तस्वीर नहीं दर्शाते हैं। भारतीय विवाहों पर वैज्ञानिक सर्वेक्षणों या अध्ययनों की कमी है जहां पति और पत्नी दोनों के दृष्टिकोण को गहराई से मांगा गया था। नमूना सर्वेक्षणों से पता चलता है कि भारत में विवाह के मुद्दे दुनिया में कहीं और देखे जाने वाले रुझानों के समान हैं। भारत में तलाक की दर बढ़ रही है। शहरी तलाक की दर बहुत अधिक है। भारत में लगभग 80 प्रतिशत तलाक की शुरुआत महिलाएं करती हैं।

इस घटना का क्या अर्थ है, इस पर राय विभाजित है: परंपरावादियों के लिए, बढ़ती संख्या समाज के टूटने को दर्शाती है, जबकि कुछ आधुनिकतावादियों के लिए, वे महिलाओं के लिए स्वस्थ नए सशक्तिकरण की बात करते हैं। [13,14]

हाल के अध्ययनों से पता चलता है कि भारतीय संस्कृति पारंपरिक व्यवस्थित विवाहों से दूर हो रही है। बनर्जी एट अल। 2005 में भारत में 33 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में 41,554 घरों का सर्वेक्षण किया। उन्होंने पाया कि भारत में विवाह के रुझान पिछले 40 वर्षों में चीन, जापान और अन्य देशों में देखे गए रुझानों के समान हैं। अध्ययन में पाया गया कि कम शादियां विशुद्ध रूप से बिना सहमति के तय की जाती हैं और सर्वेक्षण में शामिल अधिकांश भारतीय शादियां सहमति से तय की जाती हैं। स्व-व्यवस्थित विवाह (भारत में प्रेम विवाह कहा जाता है) का प्रतिशत भी बढ़ रहा था, खासकर भारत के शहरी हिस्सों में।

परिणाम

भारत में कुछ त्योहार कई धर्मों द्वारा मनाए जाते हैं। उल्लेखनीय उदाहरणों में दिवाली शामिल है, जो पूरे देश में हिंदुओं, सिखों, बौद्धों और जैनियों द्वारा मनाई जाती है और बुद्ध पूर्णिमा, कृष्ण जन्माष्टमी, अम्बेडकर जयंती बौद्धों और हिंदुओं द्वारा मनाई जाती है। सिख त्योहार, जैसे कि गुरु नानक जयंती, बैसाखी, पंजाब और दिल्ली के सिखों और हिंदुओं द्वारा पूरी धूमधाम से मनाए जाते हैं, जहां दोनों समुदाय एक साथ आबादी का भारी बहुमत बनाते हैं। भारत की संस्कृति में रंग भर रहे हैं द्री महोत्सवभारत के आदिवासी त्योहारों में से एक है, जो अरुणाचल प्रदेश की जीरो घाटी के अपतानियों द्वारा मनाया जाता है, जो भारत का सबसे पूर्वी राज्य है। नवरोज भारत के पारसी समुदाय का सबसे महत्वपूर्ण त्योहार है।

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

A Monthly Peer Reviewed Journal

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 3, Issue 7, July 2014

भारत की 2011 की जनगणना के अनुसार, 172 मिलियन से अधिक मुसलमानों के साथ भारत में इस्लाम दूसरा सबसे बड़ा धर्म है। इस्लामी त्योहार जो भारत में मनाए जाते हैं और सार्वजनिक अवकाश घोषित किए जाते हैं; ईद-उल-फितर , ईद-उल-अधा (बकरी ईद), मिलाद-उन-नबी , मुह्रम और शब-ए-बरात । कुछ भारतीय राज्यों ने विशेष क्षेत्रीय लोकप्रिय त्योहारों के लिए क्षेत्रीय छुट्टियों की घोषणा की है; जैसे अरबीन , जुमुअह-तुल-विदा और शब-ए-क़दर ।[15,16]



राधा

भारत की 2011 की जनगणना के अनुसार, 27.8 मिलियन से अधिक ईसाइयों के साथ भारत में ईसाई धर्म तीसरा सबसे बड़ा धर्म है। 27.8 मिलियन से अधिक ईसाइयों के साथ, जिनमें से 17 मिलियन रोमन कैथोलिक हैं, भारत कई ईसाई त्योहारों का घर है। देश क्रिसमस और गुड फ्राइडे को सार्वजनिक अवकाश के रूप में मनाता है।

क्षेत्रीय और सामुदायिक मेले भी भारत में एक आम त्योहार हैं। उदाहरण के लिए, राजस्थान का पुष्कर मेला दुनिया के सबसे बड़े मवेशियों और पशुओं के बाजारों में से एक है।[17,18]

भारत की विविधता ने कई लेखकों को देश की संस्कृति के बारे में अपनी धारणाओं को कलमबद्ध करने के लिए प्रेरित किया है। ये लेखन भारत की संस्कृति की एक जटिल और अक्सर परस्पर विरोधी तस्वीर पेश करते हैं। भारत दुनिया में सबसे अधिक जातीय और धार्मिक रूप से विविध देशों में से एक है। "भारतीय संस्कृति" की अवधारणा एक बहुत ही जटिल और जटिल मामला है। भारतीय नागरिकों को विभिन्न जातीय, धार्मिक, जाति, भाषाई और क्षेत्रीय समूहों में विभाजित किया जाता है, जिससे "भारतीयता" की वास्तविकताएं बेहद जटिल हो जाती हैं। यही कारण है कि भारतीय पहचान की अवधारणा में कुछ कठिनाइयां आती हैं और "भारतीय" अभिव्यक्ति का संक्षिप्त अर्थ क्या है, इसके बारे में धारणाओं की एक श्रृंखला है। हालाँकि, इस विशाल और विषम रचना के बावजूद, कुछ अंतर्निहित आंतरिक शक्तियों (जैसे एक मजबूत संविधान, सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार, लचीली संघीय संरचना, धर्मनिरपेक्ष शैक्षिक नीति, आदि) और कुछ ऐतिहासिक घटनाओं (जैसे भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन) से किसी प्रकार की विशिष्ट या साझा भारतीय संस्कृति का निर्माण होता है। , विभाजन, पाकिस्तान के खिलाफ युद्ध, आदि) हिंदू संस्कृति आंख मूल रूप से भारत के उत्तरी भाग से भारतीय संस्कृति, यानी भारत की संस्कृति को उजागर करने वाली पुस्तकों की एक प्राचीन श्रृंखला है।[19]

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

A Monthly Peer Reviewed Journal

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 3, Issue 7, July 2014



ताज महल

उद्योग सलाहकार यूजीन एम. मकर के अनुसार, उदाहरण के लिए, पारंपरिक भारतीय संस्कृति को अपेक्षाकृत सख्त सामाजिक पदानुक्रम द्वारा परिभाषित किया गया है। उन्होंने यह भी उल्लेख किया है कि कम उम्र से ही बच्चों को समाज में उनकी भूमिकाओं और स्थानों की याद दिलाई जाती है। इस बात को और पुष्ट किया जाता है, मकर नोट, वैसे, कई लोगों का मानना है कि देवताओं और आत्माओं की उनके जीवन को निर्धारित करने में एक अभिन्न और कार्यात्मक भूमिका होती है। धर्म जैसे कई अंतर संस्कृति को विभाजित करते हैं। हालांकि, एक कहीं अधिक शक्तिशाली विभाजन गैर-प्रदूषणकारी और प्रदूषणकारी व्यवसायों में पारंपरिक हिंदू विभाजन है। मकर का दावा है कि सख्त सामाजिक वर्जनाओं ने हजारों सालों से इन समूहों पर शासन किया है। हाल के वर्षों में, विशेष रूप से शहरों में, इनमें से कुछ रेखाएं धुंधली हो गई हैं और कभी-कभी गायब भी हो गई हैं। वह लिखते हैं कि महत्वपूर्ण पारिवारिक संबंध 1 गोत्र तक फैले हुए हैं, मुख्य रूप से पितृवंशीय वंश या जन्म के समय एक हिंदू को सौंपा गया कबीला। ग्रामीण क्षेत्रों में और कभी-कभी शहरी क्षेत्रों में भी, यह आम बात है कि परिवार की तीन या चार पीढ़ियाँ एक ही छत के नीचे रहती हैं। कुलपति अक्सर परिवार के मुद्दों को हल। [20]



मीनाक्षी मंदिर

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

A Monthly Peer Reviewed Journal

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 3, Issue 7, July 2014

दूसरों की भारतीय संस्कृति के बारे में एक अलग धारणा है। कई सबसे अधिक बिकने वाली व्यावसायिक पुस्तकों के लेखक डेस डियरलॉव द्वारा सीके प्रहलाद के साथ एक साक्षात्कार के अनुसार, आधुनिक भारत कई भाषाओं, धर्मों और परंपराओं के साथ बहुत विविध संस्कृतियों का देश है। बच्चे इस विविधता को स्वीकार करने और आत्मसात करने के लिए मुकाबला करने और सीखने से शुरू करते हैं। प्रहलाद - जो भारत में पैदा हुए और वहीं पले-बढ़े - ने साक्षात्कार में दावा किया कि भारतीय, दुनिया में हर किसी की तरह, अद्वितीय के रूप में व्यवहार करना चाहते हैं, व्यक्तियों के रूप में, खुद को व्यक्त करना और नवाचार की तलाश करना चाहते हैं। एक अन्य रिपोर्ट में, सोसाइटी फॉर ह्यूमन रिसोर्स मैनेजमेंट की नैन्सी लॉकवुड 140 देशों में सदस्यों के साथ दुनिया का सबसे बड़ा मानव संसाधन संघ, लिखता है कि पिछले दो दशकों में, भारत में सामाजिक परिवर्तन पारंपरिक भारतीय संस्कृति की अपेक्षाओं के विपरीत नाटकीय रूप से विपरीत है। इन परिवर्तनों ने भारतीय परिवारों को लड़कियों को शिक्षा के अवसर देने, घर से बाहर काम करने वाली महिलाओं को स्वीकार करने, करियर बनाने और महिलाओं के लिए कॉर्पोरेट भारत में प्रबंधकीय भूमिकाएँ प्राप्त करने की संभावना को खोलने के लिए प्रेरित किया है। लॉकवुड का दावा है कि परिवर्तन धीमा है, फिर भी सांस्कृतिक परिवर्तन के पैमाने का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि भारत के 397 मिलियन श्रमिकों में से 124 मिलियन अब महिलाएं हैं। भारत में महिला सशक्तिकरण के मुद्दे दुनिया में कहीं और के समान हैं। [18,19]

निष्कर्ष

अर्थशास्त्र में भारत में जन्मे नोबेल पुरस्कार विजेता अमर्त्य सेन के अनुसार, आधुनिक भारत की संस्कृति अपनी ऐतिहासिक परंपराओं का एक जटिल मिश्रण है, जो सदियों से औपनिवेशिक शासन और वर्तमान पश्चिमी संस्कृति के प्रभावों से प्रभावित है - दोनों संपार्श्विक और द्वंद्वत्मक रूप से। सेन का मानना है कि पश्चिम में भारत की बाहरी छवियाँ अक्सर भारत और पश्चिम के बीच - वास्तविक या काल्पनिक - अंतर पर जोर देती हैं। पश्चिमी देशों में समानता खोजने और दिखाने के बजाय पश्चिमी परंपराओं की मुख्यधारा से भारतीय संस्कृति में अंतर को दूर करने और उजागर करने के लिए काफी झुकाव है। पश्चिमी लेखक और मीडिया आमतौर पर भारतीय संस्कृति और परंपराओं के महत्वपूर्ण पहलुओं को महत्वपूर्ण तरीकों से याद करते हैं। भारत के विभिन्न भागों में भारतीय परंपराओं की गहरी निहित विविधता, भारत के इन समरूप विवरणों में उपेक्षित है। सेन लिखते हैं, भारतीय संस्कृति की धारणा, जो भारत में पैदा नहीं हुए और पले-बढ़े, कम से कम तीन श्रेणियों में से एक हैं:-

विदेशीवादी दृष्टिकोण: यह भारत की संस्कृति के चमत्कारिक पहलुओं पर केंद्रित है। भारतीय संस्कृति को समझने के इस दृष्टिकोण का फोकस अलग, अजीब और जैसा हेगेल ने कहा, "एक ऐसा देश जो यूरोपीय लोगों की कल्पना में सहस्राब्दियों से अस्तित्व में है।" [20]



योग भारत से शुरू हुआ

मजिस्ट्रियल दृष्टिकोण: यह भारत से निपटने के लिए आवश्यक श्रेष्ठता और संरक्षकता की भावना को मानता है, एक ऐसा देश जिसे जेम्स मिल के इतिहासलेखन ने विचित्र रूप से आदिम संस्कृति के रूप में सोचा था। जबकि बहुत से ब्रिटिश पर्यवेक्षक भारत के इस

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

A Monthly Peer Reviewed Journal

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 3, Issue 7, July 2014

तरह के विचारों से सहमत नहीं थे, और कुछ गैर-ब्रिटिश लोगों ने किया, यह एक ऐसा दृष्टिकोण है जो भारत की संस्कृति के बारे में कुछ भ्रम में योगदान देता है।

क्यूरेटोरियल दृष्टिकोण: यह भारत के विभिन्न हिस्सों में भारतीय संस्कृति की विविधता को देखने, वर्गीकृत करने और रिकॉर्ड करने का प्रयास करता है। क्यूरेटर केवल अजीब की तलाश नहीं करते हैं, राजनीतिक प्राथमिकताओं से नहीं तौले जाते हैं, और रूढ़ियों से मुक्त होते हैं। क्यूरेटोरियल दृष्टिकोण, फिर भी, भारतीय संस्कृति को वास्तव में हो सकता है की तुलना में अधिक विशेष और असाधारण रूप से दिलचस्प के रूप में देखने का झुकाव है।

भारत के भीतर भारत की सांस्कृतिक विविधता के लिए एक व्यवस्थित जिज्ञासा से प्रेरित क्यूरेटोरियल दृष्टिकोण ज्यादातर अनुपस्थित है। सुसान बेली ने अपनी पुस्तक में कहा है कि कथित भारतीय संस्कृति पर भारत और ओरिएंटलिस्ट विद्वानों में काफी विवाद है। वह स्वीकार करती हैं कि आधुनिक भारत में जाति की व्यापकता और सख्त सामाजिक पदानुक्रम के कई विवाद दावे हैं। बेली ने नोट किया कि भारतीय उपमहाद्वीप का अधिकांश भाग ऐसे लोगों से आबाद था जिनके लिए जाति के औपचारिक भेद और सख्त सामाजिक पदानुक्रम उनकी जीवन शैली में केवल सीमित महत्व के थे। थाउज़ेंड माइल्स ऑनलाइन मैगज़ीन से तनीषा राठौर ने लिखा, "हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी (2014 से उनकी सरकार के बाद से) ने बेहतर वातावरण के लिए कई पहल की हैं, जैसे कूड़ेदान में कचरा फेंकना। मुझे समझ नहीं आता कि कैसे स्नातक, स्नातकोत्तर और कभी-कभी डॉक्टरेट इसे समझने में असफल हो जाते हैं; कूड़ेदानों में फेंक दिया जाना चाहिए जिसे एक बच्चा आसानी से समझता है। क्या यह मानव मस्तिष्क का उसके शैक्षिक वर्षों में क्रमिक विकास है?" [19,20]



ओणम त्योहार

एक अमेरिकी समाजशास्त्री रॉसर के अनुसार, दक्षिण एशियाई मूल के अमेरिकियों को लगता है कि भारत की संस्कृति की पश्चिमी धारणा में कई रूढ़ियाँ हैं। रॉसर ने नोट किया कि भारत की संस्कृति के बारे में संयुक्त राज्य अमेरिका के अधिकांश प्रवचन स्वतंत्र भारत के लिए शायद ही कभी समर्पित होते हैं। लोग जल्दी से इसके धर्म और संस्कृति के बारे में व्यापक और त्रुटिपूर्ण आध्यात्मिक धारणाएँ बनाते हैं, लेकिन आधुनिक भारत में नागरिक समाज और राजनीतिक संस्कृति का मूल्यांकन करते समय कहीं अधिक चौकस होते हैं। ऐसा लगता है कि दक्षिण एशिया का मूल्य मानव ज्ञान में उसके प्राचीन योगदान में ही निहित है, जबकि आधुनिकीकरण या विकास के उसके दयनीय प्रयासों को नज़रअंदाज़ किया जाना चाहिए और संरक्षण दिया जाना चाहिए। रॉसर ने कई साक्षात्कार आयोजित किए और टिप्पणियों का सारांश दिया। अध्ययन में भारत की संस्कृति के बारे में पश्चिमी धारणाओं और साक्षात्कार किए गए लोगों के प्रत्यक्ष अनुभव के बीच काफी अंतर बताया गया है। उदाहरण के लिए:-

दक्षिण एशियाई लोगों की प्रस्तुति एक मानक शैक्षणिक दृष्टिकोण है जो "सभ्यता के पालना" से तेजी से चलता है - मिस्र और मेसोपोटामिया के साथ सिंधु घाटी के विपरीत - आर्यों के अतीत पर, जो किसी तरह हमारे पूर्वज थे - गरीबी से त्रस्त, अंधविश्वासी,

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

A Monthly Peer Reviewed Journal

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 3, Issue 7, July 2014

बहुदेववादी, जाति-ग्रस्त हिंदू जीवन शैली ... और फिर किसी तरह जादुई रूप से महात्मा गांधी की स्तुति के साथ समाप्त होती है। एक विशिष्ट पाठ्यपुस्तक ट्रोप ताजमहल की रंगीन तस्वीर के साथ मानक प्राचीन भारत मीट्स द एज ऑफ एक्सपेंशन दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। अहिंसा पर एक साइडबार हो सकता है या संसार और पुनर्जन्म या जीवन के चार चरणों या चार आर्य सत्तों के चित्रण की व्याख्या करते हुए मंडलियों को जोड़ने का एक चार्ट हो सकता है। वास्तविक जानकारी की कमी के बीच, इंद्र या वरुण जैसे देवता को समर्पित एक संपूर्ण पृष्ठ मिल सकता है, जो स्वीकार करते हैं कि अधिकांश आधुनिक हिंदुओं के विश्वासों की तुलना में अस्पष्ट हैं। [20]

संदर्भ

1. जॉन के (2012), भारत: एक इतिहास, दूसरा संस्करण - संशोधित और अद्यतन, ग्रोव प्रेस / हार्पर कॉलिन्स, आईएसबीएन 978-0-8021-4558-1, परिचय और अध्याय 3 से 11 देखें
2. ए बी मोहम्मद, मलिका (2007), भारत में समग्र संस्कृति की नींव, आकार बुक्स, आईएसबीएन 81-89833-18-9
3. लेवी, सिल्वेन; प्रिज़िलुस्की, जीन; बलोच, जूल्स (1993)। भारत में प्री-आर्यन और प्री-द्रविड़ियन। एशियाई शैक्षिक सेवाएं। आईएसबीएन 978-81-206-0772-9.
4. लेवी, सिल्वेन; प्रिज़िलुस्की, जीन; बलोच, जूल्स (1993)। भारत में प्री-आर्यन और प्री-द्रविड़ियन। एशियाई शैक्षिक सेवाएं। आईएसबीएन 978-81-206-0772-9. यह आगे सिद्ध हो चुका है कि प्राचीन भारत के न केवल भाषाई बल्कि कुछ सांस्कृतिक और राजनीतिक तथ्यों को भी ऑस्ट्रोएशियाटिक (सोम-खमेर) तत्वों द्वारा समझाया जा सकता है।
5. "चावल की खेती प्राचीन दुनिया में कैसे फैल सकती है" | www.science.org | 26 अक्टूबर 2021 को लिया गया।
6. एडम्स, सीजे, धर्मों का वर्गीकरण: भौगोलिक, एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका, 2007. अभिगमित: 15 जुलाई 2010
7. बाउमन, चाड एम। (2016)। "भारत में विश्वास और विदेश नीति: कानूनी अस्पष्टता, चयनात्मक ज़ेनोफ़ोबिया, और अल्पसंख्यक विरोधी हिंसा"। आस्था और अंतर्राष्ट्रीय मामलों की समीक्षा। 14 (2): 31-39। डीई: 10.1080/15570274.2016.1184437।
8. हौटस्मा 1936, पृ. 100, खंड 2
9. स्टेपैनियट्स मारिएटा, 2002, इस्लाम के साथ पारसी धर्म का सामना, जर्नल = फिलॉसफी ईस्ट एंड वेस्ट, खंड 52, अंक 2, हवाई प्रेस विश्वविद्यालय, पृष्ठ 163।
10. अफोल्टर, फ्रेडरिक डब्ल्यू. (2005). "द स्पेक्टर ऑफ़ आइडियोलॉजिकल जेनोसाइड: द बहाईज़ ऑफ़ ईरान" (पीडीएफ)। युद्ध अपराध, नरसंहार और मानवता के खिलाफ अपराध। 1 (1): 75-114.
11. मोत्ताहेदेह, रॉय, द मेटल ऑफ़ द पैगंबर: रिलिजन एंड पॉलिटिक्स इन ईरान, वन वर्ल्ड, ऑक्सफोर्ड, 1985, 2000, पृष्ठ.238
12. एन केएस लैम्बटन, 1981, मध्यकालीन इस्लाम में राज्य और सरकार: इस्लामी राजनीतिक सिद्धांत के अध्ययन के लिए एक परिचय: न्यायविद, रूटलेज, पृष्ठ 205, आईएसबीएन 9780197136003।
13. मेरी जोसेफ डब्ल्यू., बचराच जेरे एल., 2006, मध्यकालीन इस्लामी सभ्यता: एलजेड, सूचकांक, श्रृंखला: मध्यकालीन इस्लामी सभ्यता: एक विश्वकोश, खंड = II, टेलर और फ्रांसिस, पृष्ठ 878, आईएसबीएन 9780415966924
14. "फारसी शासन के तहत"। बीबीसी. 16 दिसंबर 2009 को लिया गया।
15. "देश परदेश: ब्रिटेन में दक्षिण एशियाई उपस्थिति", पृष्ठ. 252, रोजर बैलार्ड द्वारा
16. "ईरान में बहाई की स्थिति"। मूल से 27 मई 2011 को संग्रहीत किया गया। 18 अप्रैल 2018 को लिया गया।
17. केनोयर, जोनाथन मार्क; ह्यूस्टन, किम्बरली (मई 2005)। प्राचीन दक्षिण एशियाई विश्व। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस। आईएसबीएन 978-0-19-517422-9. ओसीएलसी 56413341। मूल से 20 नवंबर 2012 को संग्रहीत किया गया।
18. निक्की स्टेफोर्ड फाईंडिंग लॉस्ट, ईसीडब्ल्यू प्रेस, 2006 आईएसबीएन 1-55022-743-2 पी। 174
19. लेवी, सिल्वेन; प्रिज़िलुस्की, जीन; बलोच, जूल्स (1993)। भारत में प्री-आर्यन और प्री-द्रविड़ियन। एशियाई शैक्षिक सेवाएं। आईएसबीएन 978-81-206-0772-9. यह आगे सिद्ध हो चुका है कि प्राचीन भारत के न केवल भाषाई बल्कि कुछ सांस्कृतिक और राजनीतिक तथ्यों को भी ऑस्ट्रोएशियाटिक (सोम-खमेर) तत्वों द्वारा समझाया जा सकता है।
20. "चावल की खेती प्राचीन दुनिया में कैसे फैल सकती है" | www.science.org | 26 अक्टूबर 2021 को लिया गया।